ISSN 2454-2725
www.jankritipatrika.in

'घर का आखिरी कमरा' उपन्यास का पुनर्पाठ

उपमा शर्मा
दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट, आगरा
Emel- upamasharma64@gmail.com

सामाजिक चेतना प्रत्येक व्यक्ति में चैतन्य और मूर्त है परन्तु अशिक्षा के अभाववश या त्रुटि से प्रभावित होकर वह कुंठित हो जाती है। इस दुष्प्रभाव से मुक्त रहना तथा कुण्ठा को अपनी अंतर्वृत्ति से तिरोहित किये रखना ही सामाजिक चेतना है। मानव की चेतना को परिवर्तित या विकसित करने में परिवेश का महत्वपूर्ण योगदान होता है। निश्चित तौर पर ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में हो रहे नये-नये प्रयोग, मनुष्य की सोच एवं रहन-सहन में हो रहे परिवर्तन व्यक्ति की सामाजिक चेतना को प्रभावित करते हैं। नागार्जुन के शब्दों में कहें तो- "सामाजिक चेतना विछिन्न न होकर बहुत हुए जल की भांति लगातार विकसित होती चली जाती है तथा भिन्न-भिन्न व्यक्तियों से अपना सम्पर्क बनाती हुई अपने पथ पर बढ़ती जाती है। मानव समाज की सामाजिक समस्याओं, राजनीतिक उठा-पटक, आर्थिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक असमानताओं से सम्बन्धित नागरिक जीवन की समानतामूलक विकास की ओर अग्रसर भावना ही सामाजिक चेतना कहलाती है।"[1] सामाजिक जीवन के सम्पूर्ण विकास के लिए व्यक्तिगत व सामूहिक दोनों ही चेतनाएं आवश्यक हैं क्योंकि मनुष्य व्यावहारिक ज्ञान के प्रभाव से ही नैतिक मूल्य प्राप्त करता है। जब-जब समाज में कोई रीति, कोई रिवाज, कोई परम्परा या नियम सड़ने-गलने लगे या जनता को अधोगति की ओर ले जाए, जनमानस को कर्तव्य विमुख कर दे तब-तब समाज को नवचेतना की जरूरत पड़ती है। प्रियदर्शन मालवीय का उपन्यास 'घर का आखिरी कमरा' इसी सामाजिक चेतना के विकास की एक कड़ी के रूप में देखा जा सकता है। यह उपन्यास प्रत्यक्ष रूप से एक ऐसे वृहद जनसमूह के मनःस्थिति को बयां करता है तो देश की आधे से अधिक आबादी का प्रतिनिधित्व करते हैं। उपन्यास को एक नए फ़लक पर समझने हेतु इसके कुछ महत्त्वपूर्ण बिन्दुओं को रेखांकित किया जा सकता है।

आज का युवा वर्ग अशिक्षा, बेरोजगारी, तनाव, रैंगिंग जैसी तमाम समस्याओं से ग्रस्त है। प्रियदर्शन मालवीय ने अपने इस उपन्यास 'घर का आखिरी कमरा' के जरिए में तत्कालीन सामाजिक विसंगतियों की सूक्ष्म पड़ताल की है। प्रियदर्शन मालवीय ने इस उपन्यास में ऐसे पात्रों का चयन किया है जो समाज के प्रतिनिधि हैं। अमजद मियाँ बेरोजगारी की समस्या से ग्रस्त है। तमाम विषम परिस्थितियों के बावजूद वह अपने अहं को नहीं छोड़ते हैं। शिक्षित होते हुए भी वह अनिश्चितता, निराशा और असुरक्षा की स्थिति से त्रस्त हैं। समाज में एक स्तर को बनाये रखने का प्रयास करते हुए जिस तनाव एवं यातनापूर्ण स्थितियों से वह गुजरते हैं, उसका कहीं अंत नहीं है। जिस कारण वह स्वयं को हारा हुआ समझते हैं। मिसाल के तौर पर उपन्यास के इन पंक्तियों को देखा जा सकता है। "कल तक कितने आत्म विश्वास और साहस से लबालब व्यक्तित्व था मेरा, मगर आज मेरे व्यक्तित्व में कितनी कायरता और लिजलिजापन आ गया है। वही शरीर है, वही खानदान है, वही योग्यता है, मगर रोजगार की उष्णता के अभाव ने मुझे कितना दीन-हीन बना दिया है। मैंने विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया था तो कितना आत्म-विश्वास था मुझसें सोचा करता था कि दुनिया मेरी मुट्ठी में है

ISSN 2454-2725 www.jankritipatrika.in
जनकृति अंतरराष्ट्रीय पत्रिका/ Jankriti International Magazine (बहुभाषी अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रिका/Multilingual International Monthly Magazine)

ISSN 2454-2725
www.jankritipatrika.in

और मैं जो चाहूँगा, प्राप्त कर लूँगा। मगर धीरे-धीरे मुट्ठी खुलती गयी और आज मेरी मुट्ठी पूरी तरह से खुल चुकी है।''[2] बेरोजगारी ने अमजद मिया को आन्तरिक तथा वाह्य दोनों तरह से तोड़ कर रख दिया है। जिस कारण उन्हें सदैव अपमानित और लज्जित तो होना ही पड़ता है साथ ही परिवार और रिश्तेदारों के बीच बेरोजगारी के कारण उन्हें हंसी का पात्र बनाया जाता है। "अभी पिछले साल की ईद के दिन फिरदौस चाचा ने उनको बेरोजगारी पर कटाक्ष करते हुए कहा था, कुछ हाथ पैर भी हिलाओगे कि यों ही हराम का खाकर पूरा जीवन काट दोगे।''[3] अमजद मियां ऐसी प्रतिक्रियाओं से हताश हो जाते हैं, परिस्थितियाँ उन्हें बिल्कुल कमजोर बना देती हैं। यह बात दीगर है कि वर्तमान परिप्रेक्ष्य में समाज की संरचना अर्थ केंद्रित हो रही है। व्यक्ति का मूल्यांकन भी अर्थ के आधार पर होने लगा है। प्रियदर्शन मालवीय के उपन्यास 'घर का आखिरी कमरा' में यह स्थिति बड़े व्यापक फ़लक में उभर कर आई है। अमजद मियां की बेकारी ने उनके समूचे परिवार को प्रभावित किया जिस कारण अमजद मियां के अब्बा अमजद मियां से सदैव खफा रहते हैं। इसका मुख्य कारण यह भी है कि माता-पिता का स्वप्न होता है कि बच्चों को शिक्षा प्रदान कर उसे नौकरी के लायक बनाना जिससे आगे चलकर उनके बुढ़ापे का सहारा बने, उनका नाम रोशन करे वहीं जब पुत्र को पढ़े-लिखे होने के बावजूद भी नौकरी के अभाव में खाली बैठे देखते है तो उनके मन में निराशा एवं तनाव की स्थिति उत्पन्न हो जाती है जो उन्हें निरन्तर चिड़चिड़ा बनाती है। अमजद मियां और उनके अब्बा के बीच भी कुछ ऐसी ही स्थिति है जिसका वर्णन करते हुए वे कहते है- "अब्बा अब चिड़चिड़े स्वभाव के तो हमेशा से थे, मगर अब उनका चिड़चिड़ापन बहुत बढ़ गया है और नाकाविले बर्दाश्त हो गया है मगर अब्बा भी क्या करें, आखिर पेन्शन के बल पर कैसे इतने बड़े परिवार का पेट भरे। भाई लोग उनकी कुछ मदद् करते नहीं, अलबत्ता हमेशा लेने तैयार रहते हैं और मैं स्वयं बेरोजगार हूँ। दरअसल इसके लिए मैं ही जिम्मेदार हूँ। मेरी असफलता ने ही अब्बा को चिड़चिड़ा बना दिया है।''[4] निश्चित रूप से प्रियदर्शन मालवीय ने बेरोजगारी एवं अर्थ में उलझते पिता-पुत्र के सम्बन्ध को बहुत ही बारीकी के साथ उजागर किया है।

बेरोजगारी के बढ़ते प्रभाव के कारण संबंधों में आए बदलाव एवं अमानवीयता ने युवा वर्ग को अन्दर तक प्रभावित किया है। बेरोजगारी जीवन की छटपटाहट, तनाव, संघर्ष और घुटन को सशक्त अभिव्यक्ति देती है जिसका बढ़ता प्रभाव युवा वर्ग को अंसतोष की स्थिति में डाल देता है परिणामस्वरूप व्यक्ति अपनी हताशा-निराशा और समाज द्वारा अपमान से बचने के लिए 'आत्महत्या' जैसे दुःसाहस पूर्ण कार्य को करने के लिए मजबूर हो जाता है। प्रियदर्शन मालवीय ने अपने उपन्यास में आधुनिक समाज की इस समस्या को मार्मिक रूप में अभिव्यक्त किया है। एक तरफ जहाँ उन्होंने इशरत भाई और अंजुम भाई की जीवन से विछिन्न होने की स्थिति का मार्मिक रूप से वर्णन है वहीं दूसरी ओर जीवन से हताश-निराश और काम की मन्दी के कारण अपने को मौत के हवाले कर देते हैं किन्तु किसी को भी उनके इस दुस्साहस पूर्ण कार्य करने की वजह का पता नहीं कि आखिर उन्होनें ऐसा क्यों किया सभी पड़ोसी आपस में बात करते हुए कहते है- "अंजाम भाई ने सल्फास खा लिया। लुल्ले ने फुसाफुसाकर ही बताया। क्यों? अमजद मियां फुसफुसाये।''[5]

ISSN 2454-2725 www.jankritipatrika.in
जनकृति अंतरराष्ट्रीय पत्रिका/ Jankriti International Magazine (बहुभाषी अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रिका/Multilingual International Monthly Magazine)

ISSN 2454-2725
www.jankritipatrika.in

जाहिर है, जीवन की विषम परिस्थितियों के कारण युवा आत्महत्या करने को बाध्य होते है। आधुनिक दौर में अमजद समय के साथ चलने अपने आपको असमर्थ मानते हैं। यह भी कहीं न कहीं अमजद मियाँ की बड़ी कमजोरी है। अमजद के अब्बा ताना मारते हुए कहते है – "'मोबाइल का इस्तेमाल तुम कर नहीं पाते, कम्प्यूटर का ज्ञान तुम्हें हैं नहीं और कार चलाना तुम्हें आते नहीं। इक्कीसवीं शताब्दी में रह रहे हो पर तुम इन छोटी-छोटी चीजों का इस्तेमाल नहीं जानते हो। आखिर जीवन में करोगे क्या?''[6] मालवीय ने अपने उपन्यास में आधुनिक युवा वर्ग की ऐसी समस्याओं का वर्णन किया हैं जिसने युवा वर्ग को गहरे तक प्रभावित करने के साथ-साथ उनके जीवन को भी निराशा की ओर ले जाने का कार्य करती है साथ ही इस वर्ग को अनैतिक एवं अनुचित कार्य करने को प्रोत्साहित करती है।

प्रारंभ से ही स्त्री का चौतरफा शोषण होता रहा है न ही उसका कभी स्वतन्त्र व्यक्तित्व रहा है न उसकी अलग अस्मिता। घर की चाहरदीवारों में ही उसका सम्पूर्ण जीवन कैद होकर रह गया है। इसी कारण एक लम्बे अर्से तक वह या तो पुरूष के हाथों की कठपुतली बनी रही या उसके लिए शारीरिक संतुष्टि का साधन। ध्यान देने योग्य बात यह है कि आज स्त्रियाँ अपने स्वतन्त्र व्यक्तित्व, आत्मनिर्भरता और अस्तित्व बोध के प्रति सजग हो रही हैं। वह अब अधिकारों के प्रति जागरूक हैं तथा अपने ऊपर हो रहे शोषण एवं हिंसा के प्रति आवाज उठाने को तत्पर है। प्रियदर्शन मालवीय जी ने अपने इस उपन्यास में स्त्री-पुरूष के बदलते रिश्ते बहुत ही बेबाकी के साथ चित्रित किया है। अमजद मियाँ की अम्मी जो पहले अपने पति की हर गलत बात के आगे मौन धारण किये रहती थी। वहीं एक दिन वह अपने पति द्वारा किये गये व्यवहार से आंतकित होते हुए आवाज उठायी। मिसाल के तौर पर उपन्यास की कुछ पंक्तियों को रेखांकित किया जा सकता है- "अम्मी की चीख ने सबको आश्चर्य में डाल दिया। अम्मी अब्बा पर चीख भी सकती हैं, यह सभी के लिए एक आश्चर्य से कम न था। परिवार के सभी सदस्य अब्बा की गुर्राहट और अम्मी की मिमियाहट के बीच पले-बढ़े थे। अमजद मियाँ के प्रति अब्बा के अतिरेकी व्यवहार से अम्मी दुःखी थी और परिवार के अन्य सदस्य भी अम्मी के दुःख में शामिल थे।''[7] उक्त उदाहरण इस बात का गवाह है कि अब स्त्री अनपे ऊपर होने वाले अत्याचारों के विरूद्ध आवाज उठाने लगी हैं। वर्षों से जो अत्याचारों की चिनगारी स्त्री के मन में सुलगती आ रही हैं वह अब आग बनकर अपने अस्तित्व का बोध कराने लगी हैं।

पुरूष प्रधान समाज होने के कारण पुरूषों के अन्दर अहं की भावना घर कर जाती हैं जिससे समाज में वह अपना अस्तित्व बनाये रखने की चेष्ठा रखता हैं। स्त्री उनके लिए मात्र एक दासी है जो उनके हर हुकुम का पालन बिना किसी विरोध के करती रहे, पुरूष समाज इसी मानसिकता का आदी हो गया है। प्रियदर्शन ने अमजद मियाँ के अब्बा-अम्मी के माध्यम से यह दर्शाया है कि अमजद मियाँ के अब्बा अम्मी की हर बात को काटते हैं अम्मी की हर बात का विरोध करते हैं क्योंकि अम्मी की बात मानने में उनकी हेठी होती हैं। पुरूषों की यह मानसिकता होती हैं कि औरत का दर्जा पुरूष के सामने दोयम दर्जे का है, इसलिए उनकी अहमियत भी उसी दर्जे की होगी। स्त्री की हर बात विरोध किया जाना चाहिए। अमजद मियाँ कहते हैं- "अम्मी पहले चुप्पी लगा जाती थी, मगर इधर कुछ दिनों से अब्बा की गलत बात का खुलकर विरोध करने लगी और अब्बा के बात-बेबात के गुस्से पर रियेक्ट करने लगी है।''[8]

ISSN 2454-2725 www.jankritipatrika.in
जनकृति अंतरराष्ट्रीय पत्रिका/ Jankriti International Magazine (बहुभाषी अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रिका/Multilingual International Monthly Magazine)

ISSN 2454-2725
www.jankritipatrika.in

काबिलेगौर है कि आज स्त्रियाँ अपेक्षाकृत पहले के सचेत हुई हैं। उनकी भागीदारी का प्रतिशत कहीं न कहीं बढ़ा है, महिलाएं जहां पहले अपनी बात कहने में असमर्थ होती थी अब स्त्री घर परिवार के निर्णय लेने एवं अपनी बात को परिवार के सामने रखने लगी हैं। परिवार में होने वाले अहम् फैसले में अपना मत देने में सक्षम हो रही हैं। अमजद मियाँ की शादी के लिए जब उसकी भाभी अपनी बहन का रिश्ता अमजद मियाँ के लिए बताती हैं तो सभी लोग लड़की के सांवली होने की वजह से रिश्ते को मंजूरी देते हैं। अमजद मियाँ की भाभी अपना मत प्रकट करते हुए कहती हैं कि- "अगर कोई बदसूरत हो तो उसकी शादी नहीं होनी चाहिए, क्या उसका यह अधिकार खत्म हो जाता हैं? अधिकार नहीं खत्म हो जाता, मगर मेरे जैसे काबिल से निकाह करने की क्या जरूरत है, दुनिया में बहुत से जाहिल पड़े हैं। मैं काबिल जितना ही हूँ , मगर समाज में मेरी स्थिति क्या है? कोड़ी के तीन बात कड़वी जरूर हैं मगर सत्य यही हैं फिर लड़की स्वभाव की अच्छी हैं। कोई लड़की शक्ल-सूरत की बहुत अच्छी हो, मगर स्वभाव की बहुत खराब हो तो क्या उसे तरजीह दिया जाना चाहिए।"[9] प्रियदर्शन मालवीय ने अपने उपन्यास के माध्यम से स्त्री-पुरूष के माध्यम से स्त्री-पुरूष के परिवर्तित संबंधों को उजागर कर समाज में नारी की स्थिति एवं उसकी जागरूकता को सामने लाने का प्रयास किया है।

हमारे जीवन में शिक्षा को जीवन का आधार बिन्दु माना गया हैं। यहाँ सभी के शिक्षा के लिए अनिवार्य समझा गया है क्योंकि शिक्षा ही जीवन का मूल आधार स्तम्भ हैं। किन्तु आज की स्थिति बिल्कुल अलग है। प्रियदर्शन मालवीय ने अमजद मियां के माध्यम से वर्तमान समय में लचर शिक्षा व्यवस्था को दर्शाया है। जहाँ अमजद मियाँ पढ़े लिखे हुए उच्च शिक्षित हैं किन्तु रोजगार के अभाव ने उनका जीवन नरक बन गया है। उन्हें सदैव शिक्षित होते हुए भी परिवार वालों का सामना करना पड़ता हैं क्योंकि यह हमारी मानसिकता बन गयी है कि शिक्षा हम केवल रोजगार पाने के लिए ही करते है। वहीं यदि उस शिक्षा के अनुसार रोजगार की प्राप्ति नहीं होती हैं तो परिवार वालों में यह भावना आ जाती है कि शिक्षा प्राप्त करके क्या मिला यही हाल अतज मियाँ का जब उनके पिता सदैव ही अमजद मियाँ को ताना मारते हुए कहते हैं- "उनकी उम्र के लड़के कहाँ तक पहुँच गये हैं और एक आपके साहबजादे हैं कि भाड़ झोंक रहे हैं। रिजवी साहब का लड़का दोघ में इंजीनियर हैं और वहाँ उसे दो लाख रूपये महीने के मिल रहे है। लताफन का लड़का एम0बी0ए करके दुबई चला गया और वहाँ उसे बहत्तर हजार रूपये महीने के मिल रहे हैं एक आपके साहबजादे है कि कौड़ी के तीन बने घूम रहे है।"[10] शिक्षित व्यक्ति की एक और समस्या है कि व्यक्ति को अपनी शिक्षा के अनुरूप रोजगार का न मिल पाना जिसके कारण उसके साथ-साथ उसके परिवार की भी आशा जुड़ जाती है कि लड़का या लड़की पढ़ लिखकर उनके रोजगार का सहारा बनेगा ऐसा ही कुछ अमजद मियाँ के साथ भी कुछ ऐसा ही है, वह पढ़े-लिखे होने के बावजूद उनके पास रोजगार की कमी है। पड़ोसी या रिश्तेदार अमजद मियाँ से उनकी बेरोजगारी का कारण पूछते हैं तो अमजद मियाँ के अब्बा कहते हैं- "लड़का यदि रोजगार नहीं पाता तो उसमें उसका क्या दोष है, जमाना ही ऐसा आ गया है। बड़े-बड़े योग्य हाथ पर हाथ धरे बैठे है और दलाल मजे मार रहे हैं। लड़के ने अपने को इतना योग्य तो बना ही लिया, योग्य न होता तो उसकी गलती होती।"[11]

ISSN 2454-2725 www.jankritipatrika.in
जनकृति अंतरराष्ट्रीय पत्रिका/ Jankriti International Magazine (बहुभाषी अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रिका/Multilingual International Monthly Magazine)

ISSN 2454-2725
www.jankritipatrika.in

इस प्रकार हम देखते हैं कि व्यक्ति को शिक्षित होते हुए भी अपमान का सामना करना पड़ता है वहीं शिक्षित व्यक्ति को अपनी शिक्षा के अनुरूप ही कार्य करना बेहतर लगता है। शिक्षा के विपरीत कार्य करने में उसे अत्यन्त निराशा का अनुभव होता है। ठीक ऐसी ही स्थिति का सामना अमजद मियाँ को भी करना पड़ता है। जब वह अपना खर्चा निकालने के लिए बच्चों को ट्यूशन पढ़ाने का कार्य करने लगते हैं उन्हें अत्यंत निराशा एवं अपमान भी सहना पड़ता है। ट्यूशन करने पर ही अमजद मियाँ को यह अहसास हुआ कि अब्बा उन्हें ट्यूशन करने से क्यों मना करते थे। जिन घरों में वे ट्यूशन पढ़ाने जाते है, वहाँ उनके प्रति परिवार के सदस्यों के मन में कोई आदर या सम्मान का भाव नहीं रहता। जब समाज में अध्यापकों के प्रति कोई आदर का भाव होगा। मगर उन्हें सालता हैं, आदर था सम्मान की जगह मिलने वाला हिकारत या असम्मान का भाव-जैसे कि परिवार के परजापौनी के प्रति होता हैं। चमन भाई को छोड़कर लगभग सभी घरों में उनके लिए संबोधन होता है- "मास्टर और बच्चों से कहा जाता हैं पढ़ने जाओ, मास्टर आ गया है। गोया कह रहे हो, महरा आ गया है, बरतन साफ करवा लो, या कहार आ गया है। पानी भरवा लो, या नाऊ आ गया, बाल बनवा लो उन्हें जब इस तरह संबोधित किया जाता है तो उसके सारे शरीर में आग सी लग जाती है, मगर क्या करें वे समाज का ढर्रा ही ऐसा हो गया है।"[12] एक प्रकार से देखें तो शिक्षित व्यक्ति का व्यक्तित्व पढे-लिखे होने के बावजूद रोजगार के अभाव में अत्यन्त संकुचित हो जाता है जो व्यक्ति को शिक्षित होने के साथ अपमान निराशा एवं पीड़ा पहुँचाता है। कुल मिलाकर हम यह कह सकते है कि मालवीय ने अपने उपन्यास में समाज की आधुनिक समस्याओं जैसे युवा वर्ग की समस्या, स्त्री-पुरूष के बदलते संबंधों एवं शिक्षित समाज की स्थिति पर प्रकाश डाला है जो आज के सामाजिक परिवेश की अत्यन्त गम्भीर समस्याओं के अंतर्गत सम्मिलित है।

संदर्भ ग्रंथ सूची-

[1] नागार्जुन की सामाजिक चेतना- प्रो. प्रणय - यात्री प्रकाशन दिल्ली, 1995 पृ सं -30
[2] घर का आखिरी कमरा - प्रियदर्शन मालवीय - 2012, पृ सं - 39
[3] वही, पृ. - 136
[4] वही, पृ. - 42
[5] वही, पृ. - 113
[6] वही, पृ. - 34
[7] वही, पृ. - 37
[8] वही, पृ. - 102
[9] वही, पृ. - 141
[10] वही, पृ. - 88
[11] वही, पृ. – 82
[12] वही, पृ. 88

ISSN 2454-2725 www.jankritipatrika.in
जनकृति अंतरराष्ट्रीय पत्रिका/ Jankriti International Magazine (बहुभाषी अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रिका/Multilingual International Monthly Magazine)